चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम हरि भूमि
दिनांक 10.4.2019 पृष्ठ सं. 11 कॉलम 1-4

एनआईआरएफ रैंकिंग में बढ़ी हरियाणा की साख

रैंकिंग के टॉप 100 में हकृवि शामिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हकृवि ने मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा सोमवार को जारी की गई एनआइआरएफ रैंकिंग में विश्वविद्यालय ने ओवरऑल रैंक के सर्वश्रेष्ठ 100 में शामिल होकर हरियाणा की साख बढ़ाई। एमएचआरडी के अन्य विश्वविद्यालयों के मुकाबले एचएयू ने ओवरऑल रैंक में देशभर के शिक्षण संस्थानों में 89वां रैंक हासिल किया है।

- ओवरऑल रैंक में हकृवि ने देशभर के शिक्षण संस्थानों में 89वां रैंक हासिल किया

उल्लेखनीय है कि इस रैंकिंग में सभी आईआईटीज, मेडिकल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज, आईआईएम, आईआईएस तथा अन्य शिक्षण एवं शोध संस्थान शामिल थे। यहां उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व राष्ट्रीय स्तर पर इस विश्वविद्यालय को अनुसंधान, शिक्षा व विस्तार के क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धियों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वर्ष 1996 में बेस्ट इंस्टीट्यूशन अवार्ड मिल चुका है। 2016 में सरदार पटेल सर्वश्रेष्ठ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् संस्थान अवार्ड तथा हाल ही में इसे पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृषि विज्ञान पुरस्कार, 2017, हरियाणा किसान रत्न पुरस्कार 2018 व कृषि शिक्षा सम्मान अवार्ड 2918 से नवाजा जा चुका है।

मंत्रालय ने दिया हकृवि को प्रमाण पत्र

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने भी छात्रों के बीच नवाचार की संस्कृति को व्यवस्थित रूप से बढ़ावा देने के लिए इंस्टीट्यूशन इनोवेशन सेल की स्थापना के लिए इस विश्वविद्यालय को प्रमाण पत्र प्रदान किया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 16.4.2019 पृष्ठ सं. 3 कॉलम 1-3

अचीवमेंट • मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय ने जारी की रैंकिंग

सस्ते कोर्स, विदेशी तालमेल और शोध से हरियाणा में हुआ एचएयू का नाम

भास्कर न्यूज | हिसार

मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा सोमवार को एनआईआरएफ की रैंकिंग जारी की गई। इसमें पूरे प्रदेश में हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी ने सबसे अच्छी रैंक हासिल की है। हालांकि 2018 की तुलना में यह कुछ कम हुई है, मगर इसके बावजूद हरियाणा में विवि की बादशाहत बरकरार है। खास बात है कि एचएयू ने केयूके और एमडीयू को भी पीछे छोड़ा है।

एचएयू की रैंकिंग को समझने के लिए पहले कारण जानना होगा कि आखिर प्रदेश में एग्रीकल्चर के क्षेत्र से जुड़ा यह विवि कैसे अच्छा प्रदर्शन कर पा रहा है। प्रदेश में युवाओं की पसंद एचएयू इसलिए भी है क्योंकि एग्रीकल्चर से जुड़े कोर्स यहां सस्ते हैं, रिसर्च के आधार पर भी वह अपना करियर बना सकते हैं। इसके साथ ही हाल में बढ़ा विदेशी संस्थानों के साथ समन्वय विवि के फ्रेमवर्क को बढ़ोत्तरी दे रहा है। कुलपति प्रो केपी सिंह ने बताया कि एग्रीकल्चर विवि होने के बावजूद एनआईआरएफ की टॉप 100 में रैंकिंग में आगे बढ़ने की कोशिश जारी है।

समझिए... 2018 और 2019 में रैंकिंग का अंतर

पिछले और इस साल ये रहा आंकड़ा	2018	2019
• एनआईआरएफ रैंकिंग की ओवरऑल श्रेणी	76	89
• एनआईआरएफ रैंकिंग में विवि की श्रेणी	50	63

रैंकिंग नीचे जाने के ये हैं कारण

1. पिछले वर्ष से इस बार अतिरिक्त 1500 शिक्षण संस्थानों ने भाग लिया है। ऐसे में कुछ अंक भी रैंकिंग को प्रभावित कर सकते हैं।
2. नए इंस्टीट्यूट जब भी दौड़ में पहली बार आते हैं वह बड़े संस्थानों की रैंकिंग को प्रभावित करते हैं।

एचएयू को मिल चुके हैं ये पुरस्कार

- बेस्ट इंस्टीट्यूशन अवार्ड 2016 में सरदार पटेल सर्वश्रेष्ठ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् संस्थान अवार्ड
- 2017 में पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृषि विज्ञान पुरस्कार
- 2018 में हरियाणा किसान रत्न पुरस्कार

आंकड़ों में समझिए एचएयू की स्ट्रेंथ

कोर्स	छात्र	छात्राएं	कुल स्टूडेंट
• यूजी 4 वर्षीय कार्यक्रम	528	445	973
• पीजी 2 वर्षीय कार्यक्रम	184	190	374
• यूजी 6 वर्षीय कार्यक्रम	259	230	489
• पीएचडी स्टूडेंट्स	390		

युवाओं की पसंद एचएयू इसलिए भी है क्योंकि एग्रीकल्चर से जुड़े कोर्स यहां सस्ते हैं

आर्थिक रिसोर्स का प्रयोग : • लाइब्रेरी : 2,55,11,003 रुपये • लैब के लिए नए इक्युपमेंट : 16,92,95,878 रुपये • इंजीनियरिंग वर्कशॉप : 2,47,01,863 रुपये • स्टूडियो : 4,99,562 रुपये

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... अमर उजाला .....

दिनांक 10.4.2019 पृष्ठ सं. ....6..... कॉलम ....6-8.....

रैंकिंग विश्वविद्यालय के स्टाफ सदस्यों के लिए गर्व का विषय : कुलपति

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने एनआईआरएफ रैंकिंग के टॉप-100 में बनाई जगह

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। राष्ट्रीय स्तर पर बेस्ट इंस्टीट्यूशन अवॉर्ड प्राप्त कर चुके चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा सोमवार को जारी की गई एनआईआरएफ रैंकिंग में सर्वश्रेष्ठ-100 में शामिल होने का गौरव प्राप्त किया है। एमएचआरडी के अन्य विश्वविद्यालयों के मुकाबले एचएयू ने ओवरऑल रैंक में देशभर के शिक्षण संस्थानों में 89वीं रैंक हासिल की है। उल्लेखनीय है कि इस रैंकिंग में सभी आईआईटीज, मेडिकल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज, आईआईएम, आईआईएस व अन्य शिक्षण एवं शोध संस्थान शामिल थे।

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि यह रैंकिंग हरियाणा राज्य तथा इस विश्वविद्यालय की फैकल्टी, गैर शिक्षक कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों के लिए गर्व और हर्ष का विषय है। उन्होंने कहा यह विश्वविद्यालय किसानों को समर्पित है, इसलिए भविष्य में भी यह नवीन कृषि प्रौद्योगिकी विकास के द्वारा किसानों के कल्याण के लिए लगातार प्रयत्नशील रहेगा। उन्होंने कहा फिलहाल हम वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुणा करने के लक्ष्य को लेकर और कृषि की वर्तमान समस्याओं के निवारण के लिए प्रयत्नशील हैं।

दूसरे देशों के साथ दो दर्जन से अधिक अनुबंध

इस विश्वविद्यालय के छात्रों, फैकल्टी एक्सचेंज, संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं और पारस्परिक हित के अन्य व्यावसायिक गतिविधियों के संदर्भ में यूरोप, अमेरिका और एशिया के दो दर्जन से अधिक प्रमुख विश्वविद्यालयों के साथ अनुबंध हैं और यहां विकसित की गई तकनीकों के व्यवसायीकरण के लिए करीब 520 सरकारी और गैरसरकारी कंपनियों व संस्थानों के साथ समझौते किए गए हैं।

282 किस्मों व संकरों का विमोचन किया

इस विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों, फलों और सब्जियों की लगभग 282 किस्मों व संकरों की पहचान व विमोचन किया है। इनमें से कुछ किस्में अन्य राज्यों और यहां तक कि विदेशों में भी लोकप्रिय हुई हैं। इन किस्मों के परिणामस्वरूप चावल, कपास, गेहूं, दलहन, तिलहन व बाजरा उत्पादन में कई गुणा वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीकों के कारण वर्तमान में राष्ट्रीय खाद्य भंडार में योगदान करने वाले राज्यों में हरियाणा का दूसरा स्थान है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक जागरण

दिनांक 10.4.2019 पृष्ठ सं. 18 कॉलम 4-6

एनआइआरएफ रैंकिंग के तहत कृषि विश्वविद्यालयों में देशभर में चौथे नंबर रहा हरियाणा कृषि विवि

जागरण संवाददाता, हिसार : एनआइआरएफ रैंकिंग में ओवरऑल कैटेगरी में देशभर में सर्वश्रेष्ठ 100 विश्वविद्यालयों में स्थान पाने वाले हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को अगर केवल एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के लिहाज से देखें तो देशभर में चौथा रैंक मिला है। एनआइआरएफ रैंकिंग के लिए देशभर के 14 कृषि संस्थानों ने इस रैंकिंग में हिस्सा लिया था। ओवरऑल रैंकिंग में 89वां स्थान पाने वाले चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से पहले तीन और कृषि विश्वविद्यालय हैं।

इनमें उत्तराखंड के पंतनगर स्थित जीबी पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी को 60वां रैंक मिला है। इसके अलावा तमिलनाडु एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, कोयंबटूर को 68वां, पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी लुधियाना को 75वां स्थान मिला है। इस तरह केवल कृषि विश्वविद्यालयों की गणना करें तो इसके बाद चौथे नंबर पर एचएयू है, जिसका ओवरऑल रैंक 89 वां है।

इसके बाद आनंद एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी गुजरात का ओवरऑल रैंकिंग में 96वां स्थान है। हालांकि मानव संसाधन विकास मंत्रालय की तरफ से जारी की जाने वाली एनआइआरएफ यानी नेशनल इंस्टीट्यूशन रैंकिंग फ्रेमवर्क के तहत केवल 9 कैटेगरी में ही रैंकिंग जारी की जाती है, जिनमें एग्रीकल्चर और वेटरनरी यूनिवर्सिटी की अलग से कोई कैटेगरी नहीं है।

टॉप 100 में एक वेटरनरी यूनिवर्सिटी भी : एनआइआरएफ रैंकिंग में वेटरनरी यूनिवर्सिटी की बात करें तो लाला लाजपत राय पशु विज्ञान एवं पशु चिकित्सा सहित देशभर के 9 वेटरनरी संस्थान ने हिस्सा लिया था, जिनमें केवल एकमात्र तमिलनाडु वेटरनरी एंड एनीमल साइंस यूनिवर्सिटी ने ओवरऑल कैटेगरी में 99वें स्थान के साथ टॉप 100 में जगह बनाई। रैंकिंग के लिए लुवास और तमिलनाड़ यूनिवर्सिटी के अलावा केरल वेटरनरी एंड एनीमल साइंस यूनिवर्सिटी, मद्रास वेटरिनरी कालेज चैन्नई, राजस्थान यूनि. ऑफ वेटरनरी एंड एनीमल साइंस बीकानेर, श्री वेंकटेश्वर वेटरनरी यूनिवर्सिटी तिरूपति आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु के नामाकल, तिरूनलवेल और थानजावुर में स्थित तीन वेटरनरी कालेज एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट ने भी हिस्सा लिया था। हिसार का लुवास विश्वविद्यालय नया और अपना स्वयं का कैंपस नहीं होने के कारण टॉप 100 में जगह नहीं बना पाया।

देश की इन 14 एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी ने लिया था हिस्सा

- आचार्य एनजी रंगा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, गंटूर, आंध्रप्रदेश।
- आनंद एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, आनंद, गुजरात।
- बिहार एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, भागलपुर, बिहार।
- सेंट्रल एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, इंफाल वेस्ट, मणिपुर।
- चौधरी चरण सिंह हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, हिसार हरियाण।
- जीबी पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, पंतनगर, उत्तराखंड।
- इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली।
- जूनागढ़ एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, जूनागढ़, गुजरात।
- नवसरी एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, नवसरी, गुजरात।
- उड़ीसा यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, खोड़दा, उड़ीसा।,
- प्रो. जयशंकर तेलंगाना स्टेट एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, हैदराबाद।
- पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, लुधियाना।
- तमिलनाडु एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, कोयंबटूर।
- यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर साइंस, कर्नाटक।

रिपोर्ट

- 14 कृषि विश्वविद्यालयों. ने किया था अप्लाई
- टॉप 100 में पांच कृषि व एक पशु चिकित्सा विवि

यह रैंकिंग हरियाणा और इस विश्वविद्यालय की फैकल्टी, गैर-शिक्षक कर्मचारियों और विद्यार्थियों के लिए गर्व और हर्ष का विषय है। यह विश्वविद्यालय किसानों को समर्पित है, इसलिए भविष्य में भी नवीन कृषि प्रौद्योगिकी विकास के द्वारा किसानों के कल्याण के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहेगा। ताकि किसानों की आय को दोगुना करने के लक्ष्य को हासिल किया जा सके। अगली बार हम अपनी रैंकिंग में ओर अधिक सुधार करेंगे।

प्रो. केपी सिंह, कुलपति, एचएयू हिसार।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम पंजाब केसरी

दिनांक 10.4.2019 पृष्ठ सं. 5 कॉलम 8

एन.आई.आर.एफ. की अंडर 100 रैंकिंग में एच.ए.यू. शामिल

हिसार, 9 अप्रैल (ब्यूरो): राष्ट्रीयस्तर पर बैस्ट इंस्टीच्यूशन अवार्ड प्राप्त कर चुके चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा सोमवार को जारी की गई एन.आई.आर.एफ. रैंकिंग में विश्वविद्यालय ने ओवरऑल रैंकिंग के सर्वश्रेष्ठ 100 में शामिल होकर हरियाणा की साख बढ़ाई। एम.एच.आर.डी. के अन्य विश्वविद्यालयों के मुकाबले एच.ए.यू. ने ओवरऑल रैंक में देशभर के शिक्षण संस्थानों में 89वां रैंक हासिल किया है। उल्लेखनीय है कि इस रैंकिंग में सभी आई.आई.टी., मैडीकल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज, आई.आई.एम., आई.आई.एस. व अन्य शिक्षण एवं शोध संस्थान शामिल थे। इससे पूर्व राष्ट्रीयस्तर पर इस विश्वविद्यालय को अनुसंधान, शिक्षा व विस्तार के क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धियों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वर्ष 1996 में बैस्ट इंस्टीच्यूशन अवार्ड, 2016 में सरदार पटेल सर्वश्रेष्ठ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थान अवार्ड तथा हाल ही में इसे पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृषि विज्ञान पुरस्कार, 2017, हरियाणा किसान रत्न पुरस्कार 2018 व कृषि शिक्षा सम्मान अवार्ड 2918 से नवाजा जा चुका है।

समाचार-पत्र का नाम अमर उजाला
दिनांक 10.4.2019 पृष्ठ सं. 6 कॉलम 1-5

उन्नत बीजों से बढ़ी देश की निर्यात क्षमता : प्रो. सिंह

राष्ट्रीय बीज परियोजना एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद बीज परियोजना की वार्षिक समूह की बैठक

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-राष्ट्रीय बीज परियोजना (फसल) की वार्षिक समूह एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की बीज परियोजना की वार्षिक समीक्षा बैठक मंगलवार को संपन्न हो गई।

तीन दिन तक चली इस संयुक्त बैठक में देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों से शामिल हुए करीब 200 वैज्ञानिकों द्वारा बीज से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर गहनता से मंथन किया गया।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने समापन समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने बीजों के विकास में देश के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा यह उन्नत बीजों का परिणाम है कि आज देश खाद्यान्नों में आत्मनिर्भर होने के साथ दूसरों देशों को भी इनका निर्यात कर रहा है। बहुत सारे कृषि जिन्सों के उत्पादन में भारत विश्व में पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर है। उन्होंने कहा बीज किसान की मूलभूत आवश्यकता है, जिससे उत्तम खेती और किसानों को अधिक आर्थिक लाभ संभव है, इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को देश के प्रत्येक किसान को गुणवत्ताशील बीजों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए। कुलपति ने कहा कि बदलते परिवेश में बीज विकास कार्यक्रम में पारंपरिक पौध प्रजनन विधियों से आगे नहीं बढ़ा जा सकता। इसके स्थान पर जीन संपादन जैसी आधुनिक तकनीकी का समावेश करना आवश्यक है। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए कहा कि फसलों के पोषण मूल्य में वृद्धि (बॉयोफोर्टिफिकेशन) के लिए जमीन में पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाने की अपेक्षा जेनेटिक इंजीनियरिंग या एलइडी लाइटिंग से भी यह कार्य संभव हो सकता है। उन्होंने बीज की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए बीजों की पैकिंग, भंडारण और पोस्ट हार्वेस्ट प्रौद्योगिकी में सुधारीकरण पर भी बल दिया।

कार्यक्रम में उपस्थित देशभर से आए वैज्ञानिक। -अमर उजाला

सेवानिवृत्ति के बाद करें युवा वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन

वीसी ने बीज विज्ञान एवं बीज विकास के क्षेत्र में श्रेष्ठ योगदान देने वाले देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों से वर्ष 2019-20 दौरान सेवानिवृत्त होने वाले कृषि वैज्ञानिकों को सम्मानित किया। साथ ही उनसे सेवानिवृत्ति के बाद अपने संस्थान से जुड़े रहकर अपने अनुभवों से युवा वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन करने का आह्वान भी किया। इस अवसर पर डॉ. विरेंद्र सिंह मोर भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में वैज्ञानिकों को सम्मानित करते कुलपति प्रो. केपी सिंह। - अमर उजाला

मऊ के डॉ. अग्रवाल ने तकनीकी सत्रों की सिफारिशों को प्रस्तुत किया

इस अवसर पर पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधीकरण नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डॉ. आरआर हनचिनाल विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। इससे पूर्व भारतीय बीज विज्ञान संस्थान मऊ (उत्तर प्रदेश) के निदेशक डॉ. दिनेश कुमार अग्रवाल ने बैठक दौरान आयोजित तकनीकी सत्रों की कार्रवाई एवं सिफारिशों को प्रस्तुत किया। हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने अतिथियों एवं प्रतिभागी वैज्ञानिकों का स्वागत करते हुए कहा कि देश का खाद्यान्न भंडार बीज कार्यक्रम पर निर्भर करता है। इसी के मद्देनजर उत्तम किस्मों के बीजों का विकास करना बहुत आवश्यक है। उन्होंने नाभिक और प्रजनक बीजों की गुणवत्ता प्रबंधन पर भी जोर दिया। बीज विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष डॉ. वीपीएस सांगवान ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

ये वैज्ञानिक हुए सम्मानित

उपरोक्त कार्यक्रम में सम्मानित किए गए वैज्ञानिकों में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के डॉ. वीपी एस सांगवान, सीआईसीआर नागपुर के डॉ. राम अवतार मीणा, गोविंद वल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय पंतनगर के डॉ. प्रदीप कुमार व डॉ. करूणा विशुनावत, जेएयू जुनागढ़ के डॉ. वजाशीभाई जीवाभाई भाटिया, एएयू आणंद के डॉ. अनिल कुमार व डॉ. बी. अशोक कुमार और वीएनकेवी परबनी के डॉ. विजय कुमार व डॉ. राजा राम कोकटे शामिल हैं। कुलपति ने इन वैज्ञानिकों को शॉल और स्मृति चिन्ह भेंट किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम हरि. भूमि
दिनांक 10.4.2019 पृष्ठ सं. 14 कॉलम 2-8

राष्ट्रीय बीज परियोजना फसल की वार्षिक बैठक के समापन पर बोले वीसी

भारत उन्नत बीजों के चलते बना अनाज का निर्यातक

- कहा : बीज की गुणवत्ता के लिए पैकिंग, स्टोरेज और पोस्ट हार्वेस्ट में सुधार आवश्यक

हरिभूमि ब्यूज ⏭ हिसार

उन्नत बीजों के कारण ही देश खाद्यान्नों में आत्मनिर्भर होने के साथ अनाज निर्यातक भी बना है। यह बात हकृवि कुलपति प्रो. केपी सिंह ने अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-राष्ट्रीय बीज परियोजना फसल की वार्षिक समूह बैठक एवं आईसीएआर की बीज परियोजना की वार्षिक समीक्षा बैठक के समापन समारोह को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि बहुत सारे कृषि जिन्सों के उत्पादन में भारत विश्व में पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर है। उन्होंने कहा बीज किसान की मूलभूत आवश्यकता है जिससे उत्तम खेती और किसानों को अधिक आर्थिक लाभ संभव है। उन्होंने बीज की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए बीजों की पैकिंग, भंडारण और पोस्ट हार्वेस्ट प्रौद्योगिकी में सुधारीकरण पर भी बल दिया।

कुलपति ने कहा कि बदलते परिवेश में बीज विकास कार्यक्रम में पारम्परिक पौध प्रजनन विधियों से आगे नहीं बढ़ा जा सकता। इसके स्थान पर जीन संपादन जैसी आधुनिक तकनीकी का समावेश करना आवश्यक है। उन्होंने एक

हिसार। वैज्ञानिकों को सम्मानित करते कुलपति प्रो. केपी सिंह। फोटो : हरिभूमि

उदहारण देते हुए कहा कि फसलों के पोषण मूल्य में वृद्धि बायोफोर्टिफिकेशन के लिए जमीन में पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाने की अपेक्षा जिनेटिक इंजीनियरिंग या एलइडी लाइटिंग से भी यह कार्य संभव हो सकता है।

उन्होंने बीज विज्ञान एवं बीज विकास के क्षेत्र में श्रेष्ठ योगदान देने वाले देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों से वर्ष 2019-20 दौरान सेवानिवृत होने वाले कृषि वैज्ञानिकों को सम्मानित किया।इस अवसर पर पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधीकरण, नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डॉ. आरआर हनचिनल विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित थे।

इससे पूर्व भारतीय बीज विज्ञान संस्थान, मऊ के निदेशक डॉ. दिनेश कुमार अग्रवाल ने बैठक दौरान आयोजित तकनीकी सत्रों की कार्यवाई एवं सिफारिशों को प्रस्तुत किया। जबकि हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने अतिथियों एवं प्रतिभागी वैज्ञानिकों का स्वागत करते हुए कहा कि देश का खाद्यान्न भंडार बीज कार्यक्रम पर निर्भर करता है।

वैज्ञानिक हुए सम्मानित

कार्यक्रम में सम्मानित किए गए वैज्ञानिकों में हकृवि के डॉ. वीपीएस सांगवान, सीआईसीआर, नागपुर के डॉ. राम अवतार मीणा, गोविंद वल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर के डॉ. प्रदीप कुमार व डॉ. करूणा विशुनावत, जेएयू, जुनागढ़ के डॉ. वजाशीभाई जीवाभाई भाटिया, एएयू, आनंद के डॉ. अनिल कुमार व डॉ. बी. अशोक कुमार और वीएनकेवी, परबनी के डॉ. विजय कुमार, डॉ. राजा राम कोकटे शामिल है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक जागरण
दिनांक 16.4.2019 पृष्ठ सं. 19 कॉलम 2-6

जेनेटिक इंजीनियरिंग, एलईडी लाइटिंग से बढ़ाई जा सकती है जमीन के पोषक तत्वों की मात्रा

विशेषज्ञों ने एचएयू में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की बीज परियोजना की वार्षिक समीक्षा बैठक में दी सलाह

जागरण संवाददाता, हिसार : एचएयू में आयोजित अखिल राष्ट्रीय बीज परियोजना की वार्षिक समूह बैठक एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की बीज परियोजना की वार्षिक समीक्षा बैठक मंगलवार को संपन्न हुई। तीन दिन चली इस संयुक्त बैठक में देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों से शामिल हुए करीब दो सौ वैज्ञानिकों ने बीज से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर मंथन किया। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने समापन समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने बीजों के विकास में देश के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की।

बैठक के समापन समारोह में मौजूद वैज्ञानिक।

वार्षिक बैठक के समापन समारोह में वैज्ञानिकों को सम्मानित करते कुलपति प्रो. केपी सिंह।

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि बदलते परिवेश में बीज विकास कार्यक्रम में पारम्परिक पौध प्रजनन विधियों से आगे नहीं बढ़ा जा सकता। इसके स्थान पर जीन संपादन जैसी आधुनिक तकनीकी का समावेश करना आवश्यक है। फसलों के पोषण मूल्य में वृद्धि (बायोफोर्टिफिकेशन) के लिए जमीन में पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाने की अपेक्षा जिनेटिक इंजीनियरिंग या एलइडी लाइटिंग से भी यह कार्य संभव हो सकता है।

बीज कार्यक्रम पर निर्भर करता है देश का खाद्यान्न भंडार : इससे पूर्व भारतीय बीज विज्ञान संस्थान, मऊ के निदेशक डा. दिनेश कुमार अग्रवाल ने बैठक दौरान आयोजित तकनीकी सत्रों की कार्यवाही एवं सिफारिशों को प्रस्तुत किया, जबकि हकृवि के अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत ने कहा कि देश का खाद्यान्न भंडार बीज कार्यक्रम पर निर्भर करता है। उन्होंने नाभिक और प्रजनक बीजों की गुणवत्ता प्रबंधन पर भी जोर दिया। कुलपति ने बीज विज्ञान एवं बीज विकास के क्षेत्र में श्रेष्ठ योगदान देने वाले देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों से वर्ष 2019-20 में सेवानिवृत होने वाले कृषि वैज्ञानिकों को सम्मानित किया। इस दौरान पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डा. आरआर हनचिनल विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। बीज विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष डा. वीपीएस सांगवान ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

ये वैज्ञानिक हुए सम्मानित : कार्यक्रम में सम्मानित किए गए वैज्ञानिकों में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के डा. वीपीएस सांगवान, सीआइसीआर नागपुर के डा. राम अवतार मीणा, गोविंद वल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय पंतनगर के डा. प्रदीप कुमार व डा. करूणा विशुनावत, जेएयू जूनागढ़ के डा. वजाशीभाई जीवाभाई भाटिया, एएयू आनंद के डा. अनिल कुमार व डा. बी अशोक कुमार और वीएनकेवी, परबनी के डा. विजय कुमार व डा. राजा राम कोकटे शामिल है। कुलपति ने इन वैज्ञानिकों को शॉल और स्मृति चिन्ह भेंट किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम पंजाब केसरी

दिनांक 10.4.2019 पृष्ठ सं. 4 कॉलम 5-7

उन्नत बीजों के कारण भारत आज आत्मनिर्भर होने के साथ ही निर्यातक देश भी बना : प्रो. सिंह

200 वैज्ञानिकों ने बीज से सम्बंधित विभिन्न पहलुओं पर गहनता से मंथन किया

कुलपति प्रो. के.पी. सिंह वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हुए।

हिसार, 9 अप्रैल (ब्यूरो): चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना राष्ट्रीय बीज परियोजना (फसल) की वार्षिक समूह बैठक एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की बीज परियोजना की वार्षिक समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। 3 दिन चली इस संयुक्त बैठक में देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों से शामिल हुए करीब 200 वैज्ञानिकों द्वारा बीज से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर गहनता से मंथन किया गया।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने समापन समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने बीजों के विकास में देश के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा यह उन्नत बीजों का परिणाम है कि आज देश खाद्यान्नों में आत्मनिर्भर होने के साथ दूसरों देशों को भी इनका निर्यात कर रहा है।

इस अवसर पर पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधीकरण नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डा. आर.आर. हनचिनल विशिष्टाअतिथि के तौर पर उपस्थित थे। इससे पूर्व भारतीय बीज विज्ञान संस्थान मऊ के निदेशक डा. दिनेश कुमार अग्रवाल ने बैठक दौरान आयोजित तकनीकी सत्रों की कार्रवाई एवं सिफारिशों को प्रस्तुत किया। जबकि अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत ने अतिथियों एवं प्रतिभागी वैज्ञानिकों का स्वागत किया।

वैज्ञानिक हुए सम्मानित

हिसार के डा. वी.पी.एस सांगवान, सी.आई.सी.आर., नागपुर के डा. राम अवतार मीणा, गोविंद वल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर के डा. प्रदीप कुमार व डा. करूणा विशुनावत, जे.ए.यू., जुनागढ़ के डा. वजाशीभाई जीवाभाई भाटिया, ए.ए.यू., आनंद के डा. अनिल कुमार व डा. बी. अशोक कुमार और वी.एन.के.वी., परबनी के डा. विजय कुमार व डा. राजा राम कोकटे शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 10.4.2019 पृष्ठ सं. 3 कॉलम 3-5

एचएयू में बीज परियोजना पर हुई बैठक में देश के 200 वैज्ञानिकों ने बीजों के उत्पादन व समस्या को लेकर बनाई रणनीति

कृषि जीन्स के उत्पादन में भारत पहले, दूसरे और तीसरे स्थान पर, निजी कंपनियों ने किया 55% बीजों का उत्पादन

भास्कर न्यूज | हिसार

कृषि जीन्स के उत्पादन में देश लगातार बढ़ रहा है, कई किस्मों के जीन्स में विश्व में भारत का पहला दूसरा व तीसरा स्थान आता है। सिर्फ यह नहीं बल्कि पहले कृषि वैज्ञानिक प्राइवेट सेक्टर को बीज उत्पादन के क्षेत्र में आगे आने की अपील करते थे, क्योंकि यह प्रतिशत काफी कम था, अब यह 55 प्रतिशत हो चुका है।

दरअसल, हिसार के एचएयू में बीज परियोजना पर राष्ट्रीय स्तर की बैठक हुई। जिसमें तीन दिन तक देश के 200 वैज्ञानिकों ने बीजों के उत्पादन, समस्या आदि पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के साथ आगे बढ़ने की रणनीति बनाई। इस बैठक का मंगलवार को समापन हुआ। जिसकी अध्यक्षता कुलपति प्रो. केपी सिंह ने की। इस मौके पर पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधीकरण, नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डॉ. आरआर. हनचिनल विशिष्ट अतिथि, भारतीय बीज विज्ञान संस्थान, मऊ के निदेशक डॉ. दिनेश कुमार अग्रवाल, अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत उपस्थित रहे।

जेनेटिक इंजीनियरिंग से पोषण में हो सकती है वृद्धि

कुलपति प्रो सिंह ने बताया कि फसलों के पोषण मूल्य में वृद्धि (बायोफोर्टिफिकेशन) के लिए जमीन में पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाने की अपेक्षा जिनेटिक इंजीनियरिंग या एलइडी लाइटिंग से भी यह कार्य संभव हो सकता है। बीज की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए बीजों की पैकिंग, भण्डारण और पोस्ट हार्वेस्ट इंजीनियरिंग में सुधार लाया जा सकता है। बीज विज्ञान एवं बीज विकास के क्षेत्र में श्रेष्ठ योगदान देने वाले देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों से वर्ष 2019-20 दौरान सेवानिवृत होने वाले कृषि वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। एचएयू के डॉ. वी.पी.एस सांगवान, सीआईसीआर, नागपुर के डॉ. राम अवतार मीणा, गोविंद वल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर के डॉ. प्रदीप कुमार व डॉ. करूणा विशुनावत, जेएयू, जुनागढ़ के डॉ. वजाशीभाई जीवाभाई भाटिया, एएयू, आनंद के डॉ. अनिल कुमार व डॉ. बी. अशोक कुमार और वीएनकेवी, परबनी के डॉ. विजय कुमार व डॉ. राजा राम कोकटे शामिल है।